पद्मभूषण क्रांतिवीर डॉ.नागनाथअण्णा नायकवडी के कार्यो की संक्षिप्त जाणकारी

भगतसिंह, बाबू गेणू, किसन अहिर, नानकसिंह आदि हजारो क्रांतिकारोने जान की बाजी लगाकर शहीद हुए । लाखों देश प्रेमीयोने कारावास भुगत लिया । लाठीमार,गोलीबार को बर्दाश्त किया, जखमी हुऐ । सौभाग्य से उनमें से कुछ जीवित बचे । अँग्रेजी सत्ता के खिलाफ का यह युध्द संघर्ष १८५७ से ही अलग अलग गदर के माध्यमसे शुरू हुआ था । १९२० के बाद मुख्यत: महात्मा गांधीजी के आवाहन के कारण आम किसान, मजदूर, छात्र स्वातंत्र्य संग्राम में उतर पडे । महात्मा गांधीजी के नेतृत्व में भिन्न भिन्न प्रकारे के सत्याग्रह आरम्भ हो गये थे । विदेशी वस्तुओं पर बहिष्कार, नमक सत्याग्रह, वन सत्याग्रह आदि उनमें से प्रमुख सत्याग्रह थे । इसी समय सुभाषचंद्र बोसजी ने आझाद हिंद सेना के दवारा अँग्रेजी सत्ता को ललकारा । आम जनता प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस स्वातंत्र्य संग्रामें शरिक थी । अँग्रेज साम्राज्यवादियों ने जान लिया कि अब भारतीय जनता का असंतोष दिन□ब□दिन बढ रहा है । अंत: भारत पर शासन करना असंभव है । परिणामत: विचार□विनिमय के माध्यमा से उन्हें भारत को स्वातंत्र्यता बहाल करनी पडी । मा.सुभाषचंद्र बोस तथा महात्मा गांधी से प्रेरणा पाकर इस स्वतंत्र्य संग्राम में क्रांतिवीर नागनाथ अण्णाजी नायकवडी तथा उनके अन्य साथियोंने जान की परवाह किये बिना स्वातंत्र्य संग्राम में कुद पडे । मृत्यू से जुंझते हुए भी भयावह माहोल से मार्ग ढूढकर स्वातंत्र्य प्राप्ति तक कर्तव्य निभाया ।

१५ जुलाई १९२२ ई. में वालवा, तहसिल वालवा में अण्णाजी का जन्म हुआ । पिताजी रामचंद्र नायकवडी चाहते थे कि अपना लडका आखाडे में जाकर पहलवान बने । यदपि माता लक्ष्मीबाई चाहती थी कि बच्चे ने बहुत पढना चाहिए । सन १९३० ई. को वहा अण्णाजी प्रायमरी शिक्षा की पढाई कर रहे थे । इसी समय क्रांतिसिंह नाना पाटील, महात्मा गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर सरकारी नोकरी का इस्तिफा देकर स्वातंत्रता की लढाई में उतर पडे । आजादी का महत्व लोगों को समझाने हेतू गाँव गाँव जाकर सभा के माध्याम से जनजागृती कर रहे थे । वालवा गाँव के ‘मालभाग’ इस स्थान पर हनुमानजी के मंदिर के सामनेवाले चबुतरे पर संध्या के समय उनकी सभा हुआ करती थी । सभा आरंभ करने से पूर्व पूरे गाँव मे जुलुस निकला करती थी, उसमें अग्रस्थान पर खडे रहकर हाथ में तिरंगा झंडा लेकर अण्णाजी स्वाभिमान से गदगद हो जाया करते थे ।

नाना पाटीलजीकी मधुर, देहाती, ग्राम्य बोली की शैली में दैनंदिन व्यवहार के उदाहरणों वाले स्वातंत्र्यता का महत्व प्रतिपादित करनेवाले वक्तव्य सूनकर लोग प्रभावित हुआ करते थे । अत: नागनाथ अण्णाजी का भी स्वातंत्र्यता की लढाई का आकर्षण बढता गया । स्कूल में भी पांडू मास्तर जैले क्रांतीकारी अध्यापक थे । परिणामत: देशभक्ति बचपन से ही उनके नस नस में बैठ गई । देश स्वातंत्रता के लिए हमे भी कुछ करना होगा, उन्हे ऐसा लगने लगा । किंतु निश्चित मार्ग प्राप्त नही हो रहा था । छठी कक्षा तक वालवा में शिक्षा पूरी होने के पश्चात सातवी कक्षा की परीक्षा आष्टा में उन्होने दी । उसके बाद कोल्हापूर के प्रिन्स शिवाजी मराठा छात्रावास में शिक्षा हेतू रहने लगे । राष्ट्रसेवादल में शरिक हो गये । छात्र आंदोलन में हिस्सा लेकर खेलकूद एवं अध्ययन में भी कामयाबी हासील की । छात्रो की सहाय्यता, सेवाभाव प्रवृत्ति से किया करते थे । अगर कोई छात्रावास छात्र बीमार पडे, तुरन्त ही मनभावन से उसकी सहाय्यता के लिए दौड पडते थे । उनकी सेवासुश्रासा किया करते थे । परिणामत: इनकी समाज विषयक एवं देशप्रेम की कर्तव्य भावना वृध्दिगत होने लगी । सन १९३९ ई. में कर्मवीर भाऊराव पाटील उपनाम अण्णाजी से उनकी भेट हुअी । उनकी आम जनता की शिक्षा के प्रयासोसे से प्रभावित होकर सन १९३९ से ४० के दरम्यान शिराला क्षेत्र के अति दुर्गम स्थानों में मित्रों के सहयोग सें व्हालंटरी स्कूल की स्थापना उन्होने की । आगे चलकर वही स्कूल रयत शिक्षण संस्था मे विलीन किये गये । कामेरी, तहसिल वालवा में छात्र परिषद का आयोजन किया गया था, उसका नेतृत्व नागनाथ अण्णाजी ने किया । छात्रावस्था में महात्मा गांधीजी की ''हरीजन'' पत्रिका को नित्य पढा करते थे । गांधीजी के राष्ट्रवादी विचारों का उनपर प्रभाव पडा था । अत: खादी वस्त्र परिधान करना आरम्भ किया । इस्लामपूर में खादी वस्त्रालय का आरंभ उन्होने किया ।

''हरीजन'' इस नित्य पत्रिका में छपा था कि तिथि ७ से ९ अगस्त सन १९४२ ई.को मुम्बई में गवालीया टँक (अगस्त क्रांति मैदान) पर देश स्तर पर अखिल भारतीय क्रांग्रेस अधिवेशन का आयोजन किया गया था । नागनाथ अण्णाजी अपने मित्रों को साथ लेकर मुम्बई पहूँचे । अण्णाजी ने वहॉ अपने मित्रोके साथ स्वयंसेवको रुप मे प्रवेश प्राप्त किया । सबसें आगेवाली कुरिसिया की कतार पूर्णत: खाली थी । वहाँ पर बैठने के कारण अण्णाजी कों निकट से महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, वल्लभाई पटेल, मौलाना आझाद आदि क्रांग्रेस नेताओं के दर्शन हुए । इस सम्मेलन में बोलनेवाले हर वक्ता हर लब्ज अण्णा अपने ह्दय में प्रतिबिम्बित कर थे । महात्मा गांधीजी ने अँग्रेज साम्राज्यवादियों को ''चले जाओ'' इस शब्द से अगाह किया तथा कार्यकर्ताओं को ''करो या मरो'' का अंतिम आव्हान किया । पंडित जवाहरलाल नेहरूजी का भाषण बहूत प्रभावपूर्ण रहा । पढाई छोडकर स्वातंत्र्य संग्राम में स्वयंको समर्पित

करने का निर्धार कर अण्णाजी वालवा में वापस लौटे । इस दरम्यान राष्ट्रीय नेताओं को अँग्रेजो ने बंदी बनाया था । परिणामत: जनता में असंतोष बढता गया । बहुत से कार्यकर्ता भूमिकत बन गए । अँग्रेज सत्ता की परवाह किये बीना स्थान स्थान पर हरताल मनाया गया । अँग्रेज सत्ता के खिलाफ असंतोष एवं क्रोध व्यक्त करने हेतू कार्यकर्ताओं ने पुलिस थाना, डाकघर, अदालते, रेल स्टेशन आदि पर हमले किये । रेल पटरियों को उखाडा गया, दूरसंचार सुविधाओं को नष्ट किया । इस कार्य में स्कूली एवं महाविद्यालयीन छात्र अधिक अग्रेसर रहे थे । सरकारी कचहरी पर जुलूस निकाले गये । अॅग्रेजो के पुलिस सिपाहियोंने आंदोनकारिया पर गोलिया बरसाई । बहुत से लोग शहीद हो गये । अनेकों को कारावास में बंदी बनाया गया । आंदोलनकारियों पर चलनेवाली गोलियों का दृश्य देखकर अण्णाजी दु:खी हो गये । अण्णाजी मन ही मन सोचने लगे कि अँग्रेजों को गोलियों का जबाब गोलियों से ही देना होगा । नेताजी सुभाषचंद्र बोस दवारा स्थापित आझाद हिंद सेना जै सी, हमें भी सशस्त्र सेना की स्थापना करनी होगी, अण्णाजी नें यह निर्धार किया । कई कठिण समस्याओं से जुझते हुए शस्त्रो को इकट्टा करना आरंभ किया । गोवा में पोर्तुगियों की सत्ता होने के कारण वहाँ पर शस्त्रों का मिलना संभव था । अत: अण्णाजी १ नवम्बर १९४२ ई.को.गोवा चले गये । १५ दिसंबर सन १९४२ ई.को.शस्त्र लेकर वापस लौटे । उसके बाद शिराला तहसिल के ऐतवडे एवं कोल्हापूर जिले के थावडा के वन में सशस्त्र सेना की स्थापना की गई । इस लढाई के लिए धन की आवश्यकता थी । सरकारी धन का ही इस काम में विनियोग होना चाहिए, अत: इस उद्देश्य से ७ जून सन १९४३ को शेणोली, तहसिल कराड में अपने साथियों के सहयोगसे स्पेशल पे ट्रेन लुट ली । १९७१६ रूपयों की धनराशि प्राप्त हुई । आंदोलन को बल मिला ।

अँग्रेजी कानून का विरोध करने हेतु स्वतन्त्र सरकार की प्रतिस्थापना करने के उद्देश्य से प्रति सरकार यह संकल्पना सामने आयी । सन १९४२ के दरम्यान उत्तर प्रदेश के बालिया एवं बंगाल के मिदनापुर में इस प्रकार के कुछ प्रयत्न भी हुए थे । परंतु ३ अगस्त सन १९४३ ई.को पणुंब्रे तहसिल शिराला में क्रांतिसिंह नाना पाटील के नेतृत्व में प्रति सरकार की स्थापना की गई । इस प्रति सरकार का अस्तित्व स्वातंन्त्र प्राप्ति तक बरकरार रहा । सातारा जिले के उत्तर की ओर प्रवाहित नीरा नदिसे जिले के दक्षिण की ओर वारणा नदी तक का क्षेत्र प्रति सरकार की नियंत्रण में था । इसके लिए १८ संघ बनाए गये थे । हर संघ का एक प्रधान एवं उपप्रधान था । वालवा संघ के प्रमुख के रूप में क्रांतिवीर अण्णाजी पर जिम्मेदारी सौपी गई थी । संघ के उपाधिकारी मल्ल किसन अहिरजी थे । १० अक्तुबर, सन १९४३ ई.को.सांगाव जिला कोल्हापूर के चावडी पुलिस थाने से अण्णाजी ने सहयोंगियो की सहायतासे ३ बंदुके एवं कारतूसो की कुछ मालाएँ लूट ली । १४ अप्रैल सन १९४४ ई.को.स्वातन्त्र संग्राम की लढाई मे देशभर

प्रसिध्द रोमहर्षक एवं शौर्यमय ''धुले खजाना'' की लुट में से ५ लाख रूपये की धनराशि प्राप्त हुई । इस घटना के कारण नागनाथ अण्णाजी के नाम की चर्चा पूरे देश में होने लगी । परिणामत: अँग्रेज सरकार के सत्ता विरोधीयों के नामों में अण्णाजी का नाम क्रांतिकारक के रूपमें अव्वल क्रम पर आ गया । अण्णाजी को पकडनेवालों को अँग्रेज सरकार की ओर से इनाम लगाया गया । खजाना लुट में प्राप्त संपूर्ण धनराशि अलग अलग प्राप्त में कार्य करनेवाले कार्यकर्ताओं में बाँट दी गयी । इस राशि का लाभ आगे चलकर स्वातन्त्रता की लढाई में बहुत हो हुआ था ।

२९ जुलाई सन १९४४ ई.को. अँग्रेजों से मिलीभगत करनेवाले देशद्रोहीयोने वालवा में अण्णाजी होने की खबर दी थी । परिणामत: वालवा में छापा मारकर अण्णाजी को बंदी बनायागया । कारावास में जाने के बाद उसी दिन जेल तोडकर बाहर निकालने को अण्णाजी ने दृढ निश्चय किया । कारावास में अण्णाजी को खबर मिली थी कि, देशद्रोही अँग्रेजों से मिलीभगत करनेवालों की एक हाथ और एक पैर अण्णाजी के साथियों ने तोड दिया है । पुलिसों ने स्थिति को ध्यान में रखते हुए इस्लामपूर से निकालकर सातारा लेल में अण्णाजी को भेज दिया । परंतु अपने साथियों की मदद से १० सितम्बर, सन १९४४ ई.को. प्रात: ८ बजे सातारा के जेल की उँची दिवारों से कुदकर अण्णाजी स्वयं ही मुक्त हो गये और फिर एक बार भूमिगत बनकर स्वातत्र्य आंदोलन का कार्य करना आरंभ किया ।

भगतसिंह, सुभाषचंद्र बोस आदि क्रांतिकारियों का अण्णाजी के मन पर काफी प्रभाव था । प्रति सरकार की आपूर्ति हेतू सुभाषचंद्र बोसजी द्वारा स्थापित आझाद हिंद सेना के सदृश्य खुदका सशस्त्र सैनिक□दल स्थापित करने का निर्धार किया । किसानो के युवा लडकों का एकत्रित किया, वे ही अण्णाजी के साथी थे । उन्हें सैनिकी प्रशिक्षण देने प्रशिक्षक ढुंढने के लिए अण्णाजी दिल्ली गये । ८८ दरियागंज दिल्ली के आझाद हिंद सेना संघ के सेनानियों के लिए केस चलानेवाले आय.एन.ए.डिफेन्स कमिटी के कार्यालय मे आझाद हिंद संघ के सेनानी नानकसिंह एवं मन्सासिंह की अकस्मात भेंट हो गई । उनके साथ अण्णाजी ने विचार विमर्ष किया । अँग्रेजों के खिलाफ लढने के मकसद से उन्हें परिचित किया । वे भी बडे उत्साह से शिराला क्षेत्र में फौजी कॅम्प को प्रशिक्षण देने तैयार हो गये और फौजी शिक्षा का मर्ग अब सरल बन गया था । आम लोग भी तरह तरह की सहायता दे रहे थे । २५ फरवरी सन १९४६ ई.को ज्ञात हुआ कि अपने दो साथियों को अँग्रेज पुलिसों ने पकड लिया है । अत: उन्हे छुडाने हेतू सोनवडे, तहसिल शिराला में अँग्रेज पुलिसों पर हमला करने का निश्चय किया गया । पुलिसों ने चालाकी से मार्ग बदल लिया । इस लढाई में अण्णाजी के दो साथी किसन अहिरजी एवं नानकसिंह शहीद हो गये । अण्णाजी को अतीव दु:ख हुआ । आगे चलकर उनकी स्मृति मे सजीव शहीद स्मारके खडी की गयी ।

प्रतिसरकार को चलाते समय क्रांतिकारियो के सामने महात्मा गांधीजी के ग्राम राज्य की कल्पना थी। गाँव□गाँव में दलों का परस्पर वैमनश्च दूर कर गाँव में शांति का मोहौल बने। राष्ट्रप्रेमी एवं सज्जनों को एकत्रित आकर रचनात्मक कार्य करना है। व्यसनमुक्त, समतामय, सुशिक्षित एवं सदृढ समाज की स्थापना करने, अन्याय अत्याचार का समूल नाश करने, साक्षरता का प्रसार,अस्पृश्य उध्दार, अंधश्रध्दा निर्मुलन, ग्राम स्वच्छता, स्त्री पुरूष समानता, दहेज बंदी, गांधी विवाह पध्दति आदि कार्य कार्यान्वित थे। अन्यायपीडित गरीबों एवं स्त्रियों को न्याय देने हेतू कार्यकर्ता काम करते रहे थे। लगभग दो हजार दावे चलाये गये और सामान्य से सामान्य जन को न्याय प्राप्त कराया।

प्रतिसरकार का रचनात्मक कार्य जोरो पर था कि कुछ दृष्ट प्रवृतिवाले गुंडा लोग इस कार्य में व्यवधान निर्माण किया करते थे। वे प्रतिसरकार को पत्रिसरकार इस संज्ञा से संबोधित किया करते थे। महात्मा गांधीजी तथा नाना पाटीलजी के नामों का जयघोष करते हुए चोरी एवं लुट खसोट करते थे, प्रतिसरकार के आंदोलन को बदनाम कर रहे थे। उनपर पाबंदी लगा अनिवार्य था। गुडा एवं जमीदार सामंत, प्रतिसरकार के आंदोलन को कुचल देना चाहते थे। वे भूमिगतो की खबर अँग्रेजो तक पहुँचाते थे। उनपर कार्रवाई करना उचित था। वास्तव में देखा जाए तो प्रति सरकार आम जनता के सहयोग से जनता के हित के लिये अँग्रेज सत्ता समाप्त कर स्वराज्य की नीवं मजबूत करना चाहते थे।

२२ अप्रैल सन १९४६ को ऐतवडे में कर्मवीर भाऊराव अण्णाजी की इच्छानुरूप सामुदायिक खेती को सफल बनाने का प्रयास करने के उद्‌देश्य से सभा संपन्न हुई। रात के अवसर पर गाँव गुडों ने हमला बोल दिया उसमें बाबूरावजी कोकाटे तथा प्रतापराव पाटील शहीद हुए। छात्र संघटनाओं के माध्याम से रयत शिक्षण संस्था को १ लाख रूपये की धनराशि का चंदा इकट्‌ठा करने का नेतृत्व अण्णाजी ने ही किया था। महार वतनों को खारिज कर उनके अधिकार वापस प्राप्त करने के लिए वतन मुक्ति संघर्ष का संघटन किया। हैद्राबाद मुक्ति संग्राम के कार्यकर्ताओं को शस्त्रों की सहायता पहुँचाने का प्रयास किया गया। उन्होने सन १९४९ ई.को. किसान शिक्षण संस्था की स्थापना कर शहीदों की स्मृति को सदैव उजागर करने हेतू हुतात्मा किसन अहिर विदयालय और हुतात्मा नानकसिंह छात्रावास की स्थापना की गयी। १३ फरवरी सन १९५० इ. को कोल्हापूर में अय्यर सरजी के घर में सत्यशोधक पध्दति से सावंतपूर, तहसिल तासगांव के श्री.यशवंत गोविंद कदम की पुत्री कुसुमताई के साथ साधारण पध्दति से विवाह संपन्न हुआ। पत्नी की पढाई के लिए प्रिन्स शिवाजी मराठा नि:शुल्क छात्रावास में व्यवस्था की गई। गाँव में लडकियों की स्वतंत्र पढाई की सुविधा के लिए जिजामाता विदयालय की स्थापना की गई। वहाँ पर अध्यापिका एवं प्रधानाध्यापिका के पद पर अण्णाजी की सौभाग्यवती कुसुमताईजी काम करने लगी।

स्वातंत्र्य प्राप्ति के पश्चात कई क्रांतिकारीयों को एहसास हुवा की वे स्वातंत्रप्राप्ती हमारे खयालोसे बहुत दूर है । स्वातंत्र्य संग्राम में हिस्सा न लेनेवाले ही राजकीय सत्ताधारीयों के निकटवर्ती बन गये है । शासन व्यवस्था के अंतर्गत पूँजिपति एवं जमींदारो की सत्ता कायम रहने लगी जनतंत्रवादी व्यवस्था की घोषणाा जरूर हुई, परंतु किसान मजदूर, परिश्रमी, किसान, मजदूर, मध्यवर्गीय मुन्शी, दलित आदिवासी आदि सामाजिक दलों को वास्तवादी स्वातंन्त्र प्राप्ति का सच्चा एवं सही लाभ नही मिला था । क्रांतिसिंह नाना पाटीलजी कहते थी कि मेरा किसान राजा सुखी बनना चाहिए । किन्तु, स्वातंन्त्रोत्तर काल में खेती व्यवसाय खतरे में पड गया । महँगाई, बेकारी, स्वास्थहिनता, नशाखोरी, भ्रष्टाचार आदि बढने लगा । अण्णाजी एवं उनके साथींयों ने सत्ता की ओर से मुखमोड लिया । आम जनता को संघटित बनाकर आंदोलन के माध्यम से राजनेताओं पर दबाव डालकर जनता को न्याय देणे का कार्य किया । मुम्बई के संयुक्त महाराष्ट्र की लढाई में क्रांतिसिंह नानाजी और क्रांतिवीर अण्णाजी ने अनंत कष्ट उठाये । आखिर राज्यनेताओं को मुंबई महाराष्ट्र को ही प्रदान करनी पडी । वालवा से इस्लामपूर तक का रस्ता बनाने हेतू शासन का साराबंदी आंदोलन किया । कृष्णा नदी पर नागठाणे में कोल्हापूर पदधती का बंधारा बनाया गया । उसी क्षेत्र के पानी की समस्या दूर हो गई । जनता के सहयोग से सार्वजनिक सहकारी जल प्रबंधन संस्था का निर्माण किया गया ।

क्रांतिसिंह नाना पाटीलजी को उनकी ढलती उम्र में वालवा में लाया गया । किसान शिक्षण संस्था के क्षेत्र मे उनका वास्तव्य रहा अण्णाजी ने सन्तान बनकर उनकी सेवा की । अण्णाजी के साथ साथ उनकी माता लक्ष्मीबाई संपूर्ण परिवारजनो, कार्यकर्ताओ आदि ने मनभावन से सेवा की । ६ दिसंबर सन १९७६ को क्रांतिसिंह वृध्दावस्था के कारण नाना पाटील जी का देहान्त हो गया । वालवा में हुतात्मा किसन अहिर विदयालय के मैदान पर नानाजी के अत्यंसंस्कार किये गये । क्रांतिसिंह नाना पाटीलजी के विचारों को बरकरार रखने के लिए किसान मजदूर, परिश्रमी, किसान, मजदूर आदि का संघटन बनाकर आम लोगों के समस्या हल किये गयी । शासन की सुविधाओं से वंचित पारधी एवं भटकंती करनेवाले समाज के पुनर्वसन का प्रयत्न किया गया ।

आंदोलन के माध्यम से लगातार आठ वर्षो तक संघर्ष कर परिश्रम के द्वारा २६ मार्च सन १९८१ को हुतात्मा किसन अहिर सहकारी चीनी मिल को स्वीकृति मिल गई । १५ गाँव के कार्यक्षेत्र में कार्यान्वित किसान मजदूर, दलित आदि बिना भेदभाव से ८ हजार शेअर्स बेचे गये । ९ करोड कर्ज की स्वीकृती जिस मिल को मिली थी, उसके लिए सिर्फ ८ करोड ५० लाख धनराशि खर्च कर केवल ११ महिनों में मिल का निर्माण किया । २० जनवरी, १९८४ को प्रथम सिझन आरंभ हो गया । पारदर्शिता

एवं कर्तव्यदक्ष बनकर काम करने के कारण चीनी व्यवसाय में ''हुतात्मा पॅटर्न'' की अलग पहचान बन गयी। भारत में प्रथम परिश्रमी दलित समाज के व्यक्ति की चीनी मिल के चेअरमन पद पर नियुक्ति कर सभी को त्याग एवं समानता का आदर्श निर्माण कर दिखाया।

संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन की ओर से सन १९५७ से सन १९६२ ई. तक वालवा परीक्षेत्र से विधानसभा सदस्य पद पर विधि मंडल में नियुक्त हो गये। सन १९८५ में पुन: जनाग्रह से राज्य विधान सभा का चुनाव लढकर और दुबारा विधानसभा के प्रतिनिधि बन गये।

सहकारी चीनी उदयोग में बहुत सारा मुनाफा मिलता है, जनता को इस बात से अगाह किया। गन्ना उत्पादक किसान, चीनी मजदूर, शिक्षण संस्था, सामाजिक आंदोलन आदि को मुनाफे का हिस्सा देने की पध्दति उन्होने प्रारंभ किगन्नेंसे जादासा जादा रिकव्हरी प्राप्त करने के लिए कई प्रयोग किय गए। गन्ना कटवाई मजदूरों के प्रश्न हल किय। वारणा बांध पीडित संग्राम संघटन की स्थापना की गई। बांधपीडितो के समस्या सुलझायी। उसी प्रकार कोयना बांधपीडित कालमावाडी बांधपीडितों के लिए आंदोलन खडे किये। इतना ही नही महाराष्ट्र के कई बांधपीडित, प्रकल्पपीडितों के प्रश्न सुलझाने के लिए आंदोलन को गति दी।

सन १९९२ ई.को जातिवादी, धर्मांद शक्तियों ने बाबरी मस्जिद गिरायी, उनके खिलाफ देश में प्रथम आवाज बुलंद की। क्रांतिवीरों के वालवा जैसी क्रांति भूमि से जातिवादी धर्मांध शक्ति का उच्चाटन करने के हेतू एकता के प्रतीक रूप मे वालवा से हुतात्मानगर सोनवडे तक ८० कि.मी. मानवी श्रृंखला का आयोजन किया गया था। किणी, जि.कोल्हापूर में किसान मजदूर, परिश्रमी किसान संघटन की ओर से परिषद का सफलता पुर्वक नियोजन किया, उस परीषद मे , ६०-६५ हजर का जनसमुदाय उपस्थित था।

सन १९९३ में किल्लारी,लातूर,औसा क्षेत्र में प्रलयकारी भूचाल हुआ। भूचालपीडितों को सर्व प्रथम सहायता देकर, १०८ संतानो को किसन अहिर सहकारी चीनी मिल ने गोद लिया। भरण पोषण तथा उनकी स्नातक तक की शिक्षा की जिम्मेदारी पूरी की।

बांधपीडितो के समान सूकापीडितो के समस्या सुलझाने के लिये जल संघर्ष आंदोलन खडा किया। सांगली,सातारा,सोलापूर जिले के १३ सुकापीडित तहसिल की जनता को संघटित कर आंदोलन को गति दी। राज्यकर्ताओ की नींद हराम हो गई। कृष्णा तीर समान जल आबंटन आंदोलन १८ वर्षो तक चलता रहा। इसकी कारण कृष्णा खोरे विकास प्राधीकरण की स्थापना हो गयी। इसी कारण कई सुखापीडीत क्षेत्रोकों पानी मिल रहा है।

दलित, आदिवासी, ग्रामीण साहित्य सम्मेलन वालवा में दो बार आयोजित कर महाराष्ट्र की साहित्यिक संस्कृति को गति देने का काम किया । सांगली, सातारा, कोल्हापूर, सोलापूर जिले की क्रांतिकारी छात्र संघटन की परिषद का आयोजन कर युवको को नई दिशा देने का प्रयत्न किया । चीनी मजदूर की गन्ना उत्पादक किसान, बांधपीडित, सुकापीडित आदी के उत्थान में परिषद का आयोजन कर परिश्रमी जनता का संघटन किया ।

सहकारी चीनी मिल पर अन्यायपूर्वक एवं जबरन आयकर लगाने पर तीव्र आंदोलन छेडा, कई जुलुस निकाले । गन्ने क्षेत्रीय प्रबंधन पर पाबंदी लगाने पर क्षेत्रीय प्रबंधन पाबंदी खारीज करने के आंदोलन किए । इसमें वे वो कामयाब हुऐ और पाबंदी उठायी गयी । विनावापसी जमा पुजी पर केंद्र शासन द्वारा लगायी गयी आयकर के विरोध मे प्रखर आंदोलन छेडा । महात्मा फुले, राजर्षी शाहू महाराज, डॉ.बाबासाहब आंबेडकर, क्रांतिसिंह नाना पाटील आदि महान देशभक्तो के विचारो के उत्तराधिकारी के रुपमे उनके विचार जीवनभर जतन किए । इसी के कारण जणताने स्वयंस्फुर्तीसे क्रांतिसिंह नाना पाटील के इस मानस पुत्र को ''क्रांतिवीर'' यह उपाधी प्रदान की । १८ दिसंबर सन २००७ को शिवाजी विश्वविदयालय कोल्हापूर के दीक्षांत समारोह के अवसर पर ''डॉक्टरेट'' की सर्वश्रेष्ठ उपाधि प्रदान कर उनका गौरव किया । भारत सरकार ने अण्णाजी को ''पद्मभूषण'' इस राष्ट्रीय पुरस्कारसे सम्मानीत कर उनके महान क्रांतिकारी देशके प्रती समर्पित जीवन का गौरव कर महामहीम राष्ट्रपती महोदया के करकमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान किया । पद्मभूषण पुरस्कार प्राप्त होने के बाद पत्रकारोने उनकी प्रतिक्रया जाननी चाही तो, उनकी आँखे भर आयी, गला भरगया । वो बोले मुझे इस पुरस्कारसे अपेक्षासे जादा सुका पिडीतो की समस्या हल करना ही मेरा ब्रीद है । किसान मजदूर, परीश्रमी किसान, दलीत मजदूर, आदिवासी जनताको सुख एवं आनंद का जीवन प्राप्त हो, समाज को सुख समृध्दी मिले, उनका समुचित विकास हो। समाजवादी विचारोंको अंगीकृत हो यही मेरी तमन्ना है ।

जीवन की चरम सिमापर दुर्घटना के कारण अण्णाजी दूर की यात्रा करना संभव नही था । किंतू आपणा जीवन सामाजिक कार्य करणेके लिए तडफ रहा था । मेरे जीवन का पलपल सामाजिक कार्य हेतु काम आना चाहीए यह उनकी इच्छा थी । आम लोगो जैसा पारीवारीक जीवन उन्हे पसंद नही था । वह जीवनभर नवसमाज निर्माण हेतु कार्यरत रहे । शहीदो के आरजु पुरी करने का कार्य करते रहे । प्रसिध्दीसे सदैव दूर रहे ।

जीवन के अंतिम समयमे मिजर, पुणे, मुंबई आदि कई स्थानोपर वैद्यकीय चिकीत्सकोने इलाज किया किंतू २२ मार्च २०१२ इ.को. इस असामान्य क्रांतीपथ जीवन जिने वाले ''क्रांतीवीर'' की ज्योत बुझगयी आण्णाजीके मकसद को ध्यान मे रखकर सामाजिक, राजनितिक, सहकारी, औद्योगिक, शैक्षणिक कार्य करते समय महात्मा फुले, शाहु महाराज, डॉ.बाबासाहब आंबेडकर क्रांतिसिंह नाना पाटील आदि महापुरूषों के वैचारिक उत्तराधिकार को चलाने वाले इस क्रांतिवीर के पदकमलोद्वारा आखी गयी धारापर चलना यही सच्ची आदरांजली होगी ।